प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

औद्यानिक फसलों के रोग प्रबंधन पर वैज्ञानिकों का प्रशिक्षण प्रारम्भ

पंतनगर। 5 फरवरी 2020। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग में स्थित उच्च संकाय प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा आज वैज्ञानिकों हेतु एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ किया गया। केन्द्र के इस 21-दिवसीय प्रशिक्षण का विषय 'किसानों की आय में वृद्धि हेतु उन्नत तकनीकों के प्रयोग से औद्यानिक फसलों की तुड़ाई से पूर्व व बाद के रोगों का प्रबंधन तथा मूल्य संवर्धन' है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन कृषि महाविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के डा. आर. एस. सिंह सभागार में हुआ।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि, कार्यवाहक अधिष्ठाता कृषि, डा. एच.एस. चावला, ने अपने संबोधन में कहा कि कृषि प्रधान देश में फसलोत्पादन को बढ़ावा देने के लिये रोग नियन्त्रण आवश्यक है। औद्यानिक फसलों में लगने वाले रोग न सिर्फ उत्पादन को वरन् उनकी गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं, जिसके फलस्वरूप किसानों की आय के साथ-साथ फलों को प्रसंस्करण करने वाले उद्योग भी प्रभावित होते हैं। उन्होंने कहा कि रोग प्रबंधन हेतु वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न तकनीक विकसित की जाती रही हैं, जिन्हें सफलतापूर्वक किसानों तक पहुंचाना आवश्यक है, जिससे फसलों में होने वाले रोगों का प्रभावशाली नियन्त्रण किया जा सके और उनसे होने वाले नुकसान से भी बचा जा सके।

पादप रोग विज्ञान विभाग के डा. प्रदीप कुमार जो निदेशक, उच्च संकाय प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में उपस्थित थे ने कहा कि हमारे देश के कुल फसल अत्पादन में औद्यानिक फसलों का महत्वपूर्ण योगदान है। ये फसलें न सिर्फ किसानों की अच्छी आय का स्रोत हैं, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिये भी आवश्यक हैं। इस फसलों के उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारक इनमें तुड़ाई से पूर्व व बाद में लगने वाले रोग एवं कीट हैं। उन्होंने बताया कि कुल उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत नुकसान फसलों में फूल आने व फल लगने के समय तथा भण्डारण व परिवहन के दौरान लगने वाले रोगों के कारण होता है, जिसके उचित व समयबद्ध नियन्त्रण से यह नुकसान बचाया जा सकता है।

इस 40वें प्रशिक्षण कार्यक्रम में 12 राज्यों के 17 वैज्ञानिक प्रतिभाग कर रहे हैं। उद्घाटन सत्र का संचालन डा. शिल्पी रावत, सह कार्यक्रम समन्वयक ने किया तथा कार्यक्रम के अन्त में डा. सत्य कुमार, कार्यक्रम समन्वयक ने सभी का धन्यवाद किया।

प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में उपस्थित अतिथि, वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षणार्थी।